शोध मंथन Vol. XIV No.I Jan.-Mar.2023 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Available at: *http:/shodhmanthan.anubooks.com*

शिक्षक विकास के पक्षों एवं गुणों के सन्दर्भ में संविधान, आयोगों, नीतियों तथा आधुनिक कालीन चौदह संत–शिक्षाविदों के विचारों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

प्राप्तिः 22.02.2023
स्वीकृतः 15.03.2023

6

डॉ० मणि जोशी
असिस्टेंट प्रोफेसर, बी०एड० विभाग
श्री जय नारायण मिश्रा पी०जी० कॉलेज, लखनऊ
ईमेलः *manijoshi9@yahoo.in*

सारांश

अनादि काल से समाज तथा राष्ट्र अपने नागरिकों को शिक्षित एवं दीक्षित करके स्वयं को विवेक–सम्मत समाज बनाने की दिशा में निरंतर प्रयासरत रहा है। यदि प्रगतिशील राष्ट्रों ने शिक्षा के माध्यम से अनेक प्रश्नों को सुलझाया है तो हमारी शिक्षा ऐसा क्यों नहीं कर पा रही है? राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर शिक्षाविदों ने अनेक प्रयास किये हैं किन्तु शिक्षक कैसा हो, उसमे क्या गुण होने आवश्यक हैं, इस प्रश्न के सटीक उत्तर की खोज अभी पूर्ण नहीं हुई है। कम्प्यूटर व तकनीकी के इस युग में शिक्षक के घटते महत्व की अवधारणा भी सत्य नहीं है। शिक्षक को समय के साथ परिवर्तनशील होना आवश्यक है परन्तु साथ ही उसे अपने देश की मूल जड़ों से जुड़े रहना भी उतना ही आवश्यक है। प्रस्तुत अध्ययन इन्ही सन्दर्भों की दिशा में एक प्रयास है।

मुख्य बिन्दु

शिक्षक, शिक्षा आयोग, शिक्षा नीति, संविधान, संत–शिक्षाविद।

प्रस्तावना

कम्प्यूटर व तकनीकी के इस युग में शिक्षक नगण्य होता जा रहा है, यह अवधारणा निश्चय ही भ्रमपूर्ण है, क्योंकि शिक्षा प्रक्रिया के प्रसिद्ध त्रिकोण में शिक्षक ही तो ज्ञान का मूल स्रोत है, जिससे ज्ञान गंगा प्रवाहित होकर शब्द तरंग के रूप में शिक्षार्थी के अन्तःकरण को आप्लवित एवं आलोकित कर देती है। किसी न किसी बिन्दु पर एवं कोण पर शिक्षक का होना परम आवश्यक है। राष्ट्र के सपनों को मूर्त रूप देने की एक मात्र शक्ति उसी में तो है। पाठ्यक्रम तो केवल उसके द्वारा निश्चित विधि एवं विधान का भाग है। शिक्षार्थी, शिक्षक के अंतर्मन का मूर्ति प्रतिरूप है। अतः आज ऐसे प्रतिभावान एवं प्रबुद्ध शिक्षक की आवश्यकता है जो विभिन्न तकनीकियों का सदुपयोग करते हुए छात्रों को न केवल प्रवीण अपितु गुणवान भी बनाये।

विभिन्न नीतियों, आयोगों व प्रतिवेदनों में शिक्षक को अनेक दृष्टिकोणों से दृष्टिगत किया गया है, तथा उसकी कार्य कुशलता एवं प्रवीणता पर प्रकाश डालते हुए शिक्षक की इस प्रतिबद्धता की ओर ध्यान दिलाया गया है कि वह विभिन्न अध्यापन विधियों एवं अधिगम विधियों का ज्ञाता हो

किन्तु इस ओर किसी का भी ध्यान न जा सका कि ऐसा प्रभावशाली शिक्षक कहाँ से लाया जाये जो शिक्षार्थी को इतना प्रतिभाशाली एवं गुणी बना दे कि राष्ट्र के संविधान में अंकित समाज के स्वप्न मूर्त रूप ले सकें।

भारतीय समाज की अन्तरात्मा कहे जाने वाले आधुनिक कालीन चौदह सन्त शिक्षाविदों– दयानन्द सरस्वती (1824), एनी बेसेन्ट (1847), भगिनी निवेदिता (1857), महर्षि कर्वे (1858), स्वामी विवेकानन्द (1863), अरबिंदो घोश (1872), विनोबा भावे (1885), स्वामी शिवानन्द (1887), जिद्दू कृष्णमूर्ति (1895), श्रीला प्रभुपाद स्वामी (1896), स्वामी चिद्भवानन्द (1898), महर्षि महेश योगी (1915), प्रेम सत्य साईं (1926) एवं आचार्य रजनीश (1931) द्वारा प्रतिपादित शिक्षक के विकास के विभिन्न पक्षों तथा गुणों का सामूहिक विश्लेष्णात्मक एवं तुलनात्मक अध्ययन किया गया एवं इस चिन्तन की उपादेयता व उपयोगिता इस बात से मापी गयी कि संविधान, विभिन्न शिक्षा आयोगों, नीतियों एवं प्रतिवेदनों के प्रकाश में शिक्षक के सन्दर्भ में चिन्तन करना कितना ग्राह्य हो सकता है।

अध्ययन का उद्देश्य

शिक्षक विकास के पक्षों एवं गुणों के सन्दर्भ में संविधान, आयोगों, नीतियों तथा आधुनिक कालीन चौदह संत–शिक्षाविदों के विचारों का विश्लेषणात्मक अध्ययन।

विधि एवं विधान

इस शोध–पत्र के लिए दार्शनिक, तुलनात्मक एवं ऐतिहासिक विधि अपनायी गयी। प्रमाणों को प्राथमिक एवं गौण स्रोतों से एकत्र किया गया। विषय वस्तु का विश्लेषण मूल ग्रन्थों, प्रतिवेदनों, पत्र–पत्रिकाओं, पुस्तिकों, आख्यान व व्याख्यानों, जीवन वृत्त, आत्म कथाओं आदि का पर्यावलोकन करके निष्कर्ष निकाले गये।

अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष

संविधान, शिक्षा आयोगों, नीतियों व प्रतिवेदनों में शिक्षक के विकास के विभिन्न पक्षों के साथ चौदह सन्त शिक्षाविदों के द्वारा प्रतिपादित शिक्षक के गुणों की तुलना करने के उपरान्त शिक्षक के विकास के विभिन्न पक्षों को निम्नलिखित प्रकार से वर्गीकृत किया जा सकता है।

संविधान

संविधान में शिक्षा के विषय में सामान्य रुप से प्रजातन्त्र की दृष्टि से तो विचार प्रकट किये गये हैं किन्तु शिक्षक के विकास, पदोन्नति, प्रशिक्षण व गुणों आदि के सन्दर्भ में विचारों को संकलित नहीं किया गया है।

विभिन्न शिक्षा आयोगों, राष्ट्रीय नीतियों तथा प्रतिवदनों में शिक्षक के विकास के विभिन्न पक्षों के सन्दर्भ में चर्चित संस्तुतियों का विवेचन

1. **राधाकृष्णन कमीशन रिपोर्ट (1948–49)**

- शिक्षकों की आर्थिक स्थिति को सुधारने व नये वेतनमान निर्धारित करने की बात महसूस की गयी।
- शिक्षकों के चार स्तर निर्धारित हों– प्रोफेसर, रीडर, लेक्चरर तथा इन्स्ट्रक्टर व उनकी प्रोन्नति गुणवत्ता के आधार पर करने की संस्तुति की गयी।

- शिक्षक कार्यकुशल हो, समय का अनुपालन करें, शिक्षण के प्रति समर्पित हों तथा नवीन विचारों एवं विधियों को स्वीकार करें।

2. मुदालियर कमीशन (1952–53)

- सभी प्रकार के विद्यालयों के लिए अध्यापकों का चुनाव समरूप हो।
- निजी विद्यालयों में प्रधानाध्यापक तथा अध्यापकों के चयन के लिए एक चयन समिति हो।
- प्रशिक्षित अध्यापकों के लिए प्रोबेशन अवधि एक वर्ष हो। अध्यापकों को शिविरों व विचार गोष्ठियों मे जाने के लिए यात्रा भत्ता दिया जाना चाहिए।
- हाईस्कूल पढ़ाने वाले अध्यापक प्रशिक्षित व ग्रेजुएट हों, तथा हायर सेकेण्डरी पढ़ाने वाले अध्यापक विश्वविद्यालय के अध्यापक के समकक्ष योग्यता वाले हों।
- विद्यालय स्तर पर अध्यापकों के बालकों को मुफ्त शिक्षा प्रदान की जाये।
- अध्यापकों के लिए त्रिलाभ योजना–पेन्शन, प्रोविडेन्ट फण्ड तथा बीमा आरम्भ करने की संस्तुति की गयी।
- अध्यापकों को विद्यालय के पास ही आवास प्रदान किये जायें, जिससे वे विद्यालय के कार्यों में अधिक समय दे सकें।
- अध्यापकों द्वारा चलाये जाने वाले प्राईवेट ट्यूशन समाप्त हो।
- अध्यापकों की सेवा निवृत्त की आयु 60 वर्ष हो।
- हायर सेकेण्डरी स्तर के समकक्ष व्यक्तियों के लिए दो वर्ष का प्रशिक्षण तथा ग्रेजुएट स्तर के छात्र के लिए एक वर्ष का प्रशिक्षण हो।
- एम०एड० के प्रशिक्षण हेतु तीन वर्ष का अध्यापन अनुभव हो।
- प्रशिक्षण संस्थाओं में समय–समय पर शोध कराये जाएँ।
- महिलाओं के प्रशिक्षण के लिए विशेष प्रबन्ध किये जाएँ।

3. कोठारी कमीशन (1964–66)

- शिक्षकों के वेतन का पैमाना एक जैसा रखा जाय। प्राईमरी, माध्यमिक एवं विश्वविद्यालय अध्यपकों के वेतनमान का अनुपात 1:2:3 होना चाहिए।
- शिक्षकों की अवकाश प्राप्ति की आयु 60 वर्ष हो। यदि अध्यापक स्वस्थ है, तो यह आयु 5 वर्ष तक बढ़ायी जा सकती है।
- शिक्षकों को सतत् प्रशिक्षण दिये जाने एवं शिविरों, सेमीनार व कार्यशालाओं मे जाने की विशेष सिफारिश की गयी।

4. शिक्षा की राष्ट्रीय नीति (1968)

- शिक्षक को समाज में उचित सम्मान मिले।
- व्यवसायरत शिक्षकों को महत्व दिया जाये।

5. राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986)

- शिक्षकों का चयन राष्ट्रीय स्तर पर हो।

- चुने हुए महाविद्यालयों मे प्रोफेसर तथा रीडर के पद सृजित किये जाएँ।
- प्रधानाचार्य, रीडर तथा प्रोफेसर के वेतनमान एक जैसे हों।
- श्रेष्ठ अध्यापकों के वेतन में वृद्धि की जाये।
- पी०एच०डी० के लिए स्नातकोत्तर स्तर पर कम से कम 55 प्रतिशत अंक अनिवार्य हों।

6. आचार्य राममूर्ति प्रतिवेदन (1990)

- सातवें अध्याय में अध्यापकों के वेतनमान में वृद्धि की शीघ्रता की बात की गयी है।
- अध्यापकों की नियुक्ति से पूर्व एक वर्ष के प्रशिक्षण की सिफारिश की गयी है।

7. जनार्दन रेड्डी प्रतिवेदन (1992)

- शिक्षक तथा उनके प्रशिक्षण के सम्बन्ध मे 21वीं टास्क फोर्स का गठन किया गया।

8. नई शिक्षा नीति (2020)

- शिक्षक को डिजिटल शिक्षा द्वारा डिजिटल कौशलों के प्रशिक्षण के लिए तैयार करने पर बल।
- शिक्षकों को ऑनलाइन शिक्षण परीक्षा व ऑनलाइन आकलन, मूल्यांकन करने के लिए प्रशिक्षित करना।
- शिक्षकों को क्षमता व समय के अनुसार ज्ञान वृद्धि के लिए विभिन्न स्तरों पर प्रशिक्षण कार्यक्रम मे प्रतिभाग करने के अवसर प्रदान करना जैसे स्वंय, दीक्षा, स्वंयप्रभा पोर्टल के माध्यम से।
- शिक्षकों को ऑनलाइन सॉफ्टवेयर की जानकारी प्रदान की जाए।
- शिक्षकों को ऑनलाइन शिक्षण के लिए विभिन्न प्लेटफार्म व उपकरण उपलब्ध कराऐ जाऐं।
- शिक्षकों को ऑनलाइन शिक्षण के लिए पाठ्य सामग्री–निर्माण के लिए प्रशिक्षित किया जाए।
- शिक्षकों को डिजिटल माध्यमों के नवाचारी उपयोग के लिए दक्ष बनाना।
- शिक्षकों के लिए उच्चतर दर्जा और उसके प्रति आदर और सम्मान के भाव को पुनर्जीवित करना होगा।
- ग्रामीण शिक्षकों का विशेष ध्यान रखा गया है, ग्रामीण क्षेत्र के उत्कृष्ट विद्यार्थी ही 4 वर्षीय एकीकृत बी०एड० डिग्री प्राप्त कर स्थानीय भाषा मे शिक्षण कार्य करेंगें।
- ग्रामीण क्षेत्र में कार्य करने को प्रोत्साहन करने के लिए आवास भत्ते में वृद्धि की संस्तुति की गई है।
- शिक्षकों के अत्यधिक स्थानांतरण पर रोक लगाने की चर्चा की गई है। स्थानांतरण मे पारदर्शिता करने के लिए ऑनलाइन सॉफ्टवेयर आधारित व्यवस्था की संस्तुति की गई है।
- स्कूली शिक्षा के स्तर पर शिक्षक पात्रता परीक्षा, टी०ई०टी० (TET) या एन०टी०ए० परीक्षा, साक्षात्कार, कक्षा मे पढ़ाने का प्रदर्शन आदि के लिए वस्तुनिष्ठता बनाने की संस्तुति की गई।

- शिक्षकों के रिक्त पदों को तुरंत भरने की संस्तुति पर बल।
- नई शिक्षा नीति–(2020) के अनुसार शिक्षकों को गैर शैक्षणिक कार्यों को करने से मुक्त करने की संस्तुति पर बल दिया गया है।
- शिक्षक पूरी तरह अधिगम कार्य मे ध्यान दे सकें व शिक्षण को प्रभावी बना सकें।
- शिक्षकों को पाठ्यक्रम व शिक्षण पद्धति को निर्धारित करने की स्वायत्तता प्रदान की जाये।
- शिक्षक छात्रों का सर्वांगीण करने में सहायक बनें।
- शिक्षकों के सतत् व्यावसायिक विकास के लिए स्थानीय स्तर से लेकर अंतर्राष्ट्रीय स्तर तक की कार्यशालाओं मे प्रतियोगिता व ऑनलाइन शिक्षक विकास मॉड्यूल की जानकारी पर बल।
- शिक्षक स्वंय के व्यावसायिक विकास के लिए प्रत्येक वर्ष 50 घंटो के सतत् व्यावसायिक विकास कार्यक्रम में भाग लें।
- कैरियर की वृद्धि योग्यता के आधार पर शिक्षकों की ऊर्ध्वाधर गतिशीलता (वर्टिकल–मोबिलिटी) पर बल।
- उत्कृष्ट शिक्षकों की पहचान व प्रोत्साहन पर बल, मेरिट आधारित कार्यकाल, पदोन्नति व वेतन व्यवस्था की संस्तुति।
- दिव्यांग बालकों को पढ़ाने व सीखने मे मदद के लिए विद्यालय शिक्षा के क्षेत्रों में विशिष्ट शिक्षकों की नियुक्ति ताकि विशिष्ट बालकों की विशेष आवश्यकताओं का ज्ञान व कौशलयुक्त होने की जरूरत पर बल ताकि समावेशी कक्षा में सामान्य सेवा पूर्व शिक्षक को विशिष्ट शिक्षा प्रदान करने में भी विशेषता प्राप्त हो।
- शिक्षक– शिक्षा के भारतीयकरण की संस्तुति की गई है।
- 2021 तक अध्यापक शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा तैयार करने पर बल।
- प्रत्येक 5–10 वर्षों मे अध्यापक–शिक्षा की उभरती जटिलताओं को ध्यान मे रखकर अपेक्षित संशोधन किया जायेगा।
- अंतर्राष्ट्रिय स्तर पर जो बेहतर है और राष्ट्रीय स्तर पर उपयोगी है, ऐसे शिक्षण, विधियों, अनुसंधान आदि के लिए सुझाव देने का काम एन०सी०ई०आर०टी० का होगा।
- 2030 तक बहु–विषयक, कॉलेजों और विश्वविद्यालयों मे शिक्षक–शिक्षा को सम्मानित किया जायेगा और शिक्षा–विभाग की स्थापना होगी जो बी०एड०, एम०एड०, और पी०एचडी० की डिग्री प्रदान करेंगे ताकि गुणवत्तापरक, उत्कृष्ट कोटि के शिक्षकों की आपूर्ति सुनिश्चित हो सके।
- 2030 तक बहु–विषयक संस्थानों में बी०एड० पाठ्यक्रम चलें।
- एक शिक्षा–स्नातक का एक पाठ्यक्रम 4 वर्षीय एकीकृत बी०एड० डिग्री पाठ्यक्रम होगा।
- जो छात्र किसी अन्य विषय मे स्नातक कर चुके हैं, उनके लिए 2 वर्षीय बी०एड० कार्यक्रम होगा।

- जो छात्र 4 वर्षीय बहु–स्नातक डिग्री या विशिष्ट विषय मे परास्नातक डिग्री प्राप्त कर चुके हैं उन्हें एक वर्षीय बी०एड० कार्यक्रम में भाग ले सकते हैं।
- सेवारत शिक्षक मुक्त दूरस्थ अधिगम (ओ०डी०एल० मोड) के माध्यम से बी०एड० कार्यक्रम मे भाग ले सकते हैं।

इस प्रकार नई शिक्षा–नीति 2020 मे शिक्षक को डिजिटल कौशल का प्रशिक्षण व दक्षता प्रदान करने, शिक्षकों का आदर सम्मान, ग्रामीण उत्कृश्ट विद्यार्थियों को प्रशिक्षित कर शिक्षण कार्य करने, शिक्षकों के स्थानांतरण को रोकने व नियंत्रित करने, योग्यता के आधार पर पदोन्नति निर्धारित करने, उत्कृष्ट शिक्षकों को प्रोत्साहित करने व 2021 तक अध्यापक शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा तैयार करने, स्कूली शिक्षकों की भर्ती प्रक्रिया व शिक्षक के सतत् व्यावसायिक विकास के लिए स्थानीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर की कार्यशालाओं में शामिल होने, शिक्षकों को समावेशी शिक्षा के माध्यम से छात्रों की आवश्यकताओं का ज्ञान व कौशलों की विकसित करने पर बल दिया गया है।

शिक्षक के गुणों के सन्दर्भ में आधुनिक कालीन चौदह संत–शिक्षाविदों के शैक्षिक दृष्टिकोण के आधार पर प्राप्त निष्कर्ष

1. **स्वामी दयानन्द (1824)**

- स्वामी दयानन्द ने एक विचित्र बात शिक्षक के विषय में कही जिसका मेल चौदह संत शिक्षाविदों में से केवल चिद्भवानन्द से खाता है कि शिक्षक गायत्री मंत्र की साधना करने वाला हो।
- दयानन्द जी के अनुसार शिक्षक न तो अधिक खाने वाला हो, न अधिक सोने वाला हो, तथा न ही बेईमान हो। इस विचार को दयानन्द जी के अतिरिक्त तेरह संत शिक्षाविदों ने अपने शैक्षिक दृष्टिकोण मे स्थान नही दिया है।
- शिक्षक अपने से छोटों से प्रेम पूर्ण व्यवहार करे, सत्यनिष्ठ हो, दुःख, सुख एवं प्रशंसा से परे हो, अध्यापन से पूर्व स्वयं पढ़े, ब्रम्ह्म का उपासक हो तथा इन्द्रियों पर नियन्त्रण रखने वाला हो। दयानन्द जी को छोड़कर अन्य सभी तेरह संत शिक्षाविद् इन बिन्दुओं पर मौन हैं।

2. **एनीबेसेन्ट (1847)**

गुरू का व्यक्तित्व अति प्रभावशाली होना चाहिए। वह समस्याओं का समाधान करने वाला, वैज्ञानिक दृष्टिकोण वाला, मौलिक विचारों को प्रोत्साहित करने वाला, बौद्धिक विकास करने वाला तथा गलत प्रतिस्पर्धा को दूर करने वाला होना चाहिए ताकि विद्यार्थियों में संकीर्ण शिष्टाचार एवं अनुशासन–हीनता उत्पन्न न हो।

- शिक्षक को प्रशिक्षित, दार्शनिक तथा मार्गदर्शन करने वाला होना चाहिए।
- इन विचारों के प्रति अन्य तेरह संत शिक्षाविद् जाग्रत नहीं हैं।

3. **भगिनी निवेदिता (1857)**

- भगिनी निवेदिता किंडर गार्टन विधि से शिक्षण के पक्ष में थी, क्योंकि बच्चों को यह अति ग्राह्य होता है किन्तु अन्य तेरह संत शिक्षाविदों का ध्यान इस ओर नहीं गया।

- निवेदिता के अनुसार शिक्षक मार्गदर्शन करने वाला, शिष्य को अन्धकार से प्रकाश की ओर ले जाने वाला, छात्रों में त्याग, प्रेम व भक्ति की भावना उत्पन्न करने वाला, उन्हें आत्म निर्भर बनाने वाला तथा छात्रों की समस्याओं को समझने की क्षमता रखने वाला होना चाहिए।

4. महर्षि कर्वे (1858)

- कर्वे जी के अनुसार शिक्षक पूर्ण रुचि व परिश्रम के साथ काम करने वाला, अध्यवसाई, धैर्यवान, स्थित प्रज्ञ, तथा हीन भावना से रहित होकर धन का यथेष्ट उपार्जन करने वाला होना चाहिए।
- उनके अनुसार शिक्षक गहन चिन्तन करने वाला, स्व–केन्द्रित न रहने वाला तथा नई दिशा में बढ़ने की हिम्मत रखने वाला होना चाहिए।
- शिक्षक को लालची तथा असामाजिक नहीं होना चाहिए।
- इन गुणों को अन्य तेरह संत शिक्षा विदों ने अपने शैक्षिक दृष्टीकोण में महत्वपूर्ण स्थान नही दिया है।

5. स्वामी विवेकानन्द (1863)

- विवेकानन्द जी शिक्षक के चार प्रमुख गुणों की ओर संकेत करते हैं–
  गुरू शास्त्रों का मर्मज्ञ व ज्ञाता हो, निष्पक्ष हो, विशुद्ध प्रेम व निःस्वार्थ भावना वाला हो तथा जन समूह के प्रति सहानुभूति पूर्ण आचरण रखने वाला हो।

6. अरविन्द घोष (1872)

- अन्य तेरह संत शिक्षाविदों से अलग श्री अरविन्द घोष के अनुसार शिक्षक की चेतना व संस्कार महत्वपूर्ण हैं।
- उनका मत है कि शिक्षा थोपी न जाय अपितु यह केवल जिज्ञासु को ही दी जाय।
- शिक्षक शिक्षण में ज्ञानेन्द्रियों का अधिक से अधिक प्रयोग करें।
- शिक्षक को बाल मनोविज्ञान का ज्ञान हो तथा वह बालक की बौद्धिक, नैतिक व व्यवहारिक क्षमताओं का विकास करने में सहायक हो।
- शिक्षक का कार्य केवल आज्ञा देना, सूचना देना व विचारों को थोपना ही नही वरन् स्व–शिक्षा के लिए उचित वातावरण प्रस्तुत करना, छात्रों को ज्ञानेन्द्रियों का सही प्रयोग बताना, आध्यात्म का ज्ञान देना तथा प्रकृति के अनुसार शिक्षा देना होना चाहिए।

7. विनोबा भावे (1885)

- विनोबा जी के अनुसार गुरू "आचार्य" है। उसे छात्रों को विचार व प्रेरणा देने वाला, आचरणवान, ईश्वर भक्त, चरित्रवान, सत्यवादी, सहनशील, अध्ययनशील, कर्तव्यनिष्ठ तथा खादी दर्शन में विश्वास रखने वाला होना चाहिए।
- शिक्षक से प्रतिज्ञा पत्र भरवाया जाना चाहिए ताकि वह शान्ति की स्थापना करने वाला बने तथा राजनीति से दूर रहे।
- शिक्षक में निम्नलिखित तीन प्रमुख गुण होने चाहिए–

- ✓ वह शीलवान हो, साधु की तरह।
- ✓ वह प्रज्ञावान हो, ज्ञानी की तरह।
- ✓ वह करुणावान हो, माँ की तरह।

8. स्वामी शिवानन्द (1887)

- स्वामी शिवानन्द के अनुसार शिक्षक में यह विशेषता हो कि वह छात्र के साथ पुत्रवत सम्बन्ध रखे।
- वह छात्रों को आदर्श मनुष्य बनने के लिए प्रशिक्षित करे, तथा छात्रों को अनीतिपूर्ण जीवन के कुप्रभावों से अवगत कराये।
- शिक्षक आत्म समर्पण की भावना से पूर्ण हो, पथ प्रदर्शक हो तथा उसे नैतिक व अध्यात्मिक आदर्शों का ज्ञान होना चाहिए।

9 जिद्दू कृष्णामूर्ति (1895)

- कृष्णमूर्ति जी कहते थे कि विद्यालय अच्छे शिक्षक से बनता है। छात्र व शिक्षक साथ–साथ विद्यालय जायें।
- सच्चा शिक्षक अन्दर से धनी होता है, वह अपने लिए कुछ नही माँगता। उसे सामाजिक बन्धनों से मुक्त होना चाहिए।
- शिक्षक के अन्दर समर्पण का भाव होना चाहिए, उसे महत्वकांक्षी न होकर अन्तरदृष्टि रखने वाला, जागरुक, धैर्यवान व बुद्धिमान होना चाहिए।

10. श्रीला प्रभुपाद स्वामी (1896)

- स्वामी जी के शब्दों में गुरू का अर्थ है सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति। उन्होनें गुरू को गोविन्द माना।
- स्वामी जी के अनुसार शिक्षक कृष्ण चेतना के प्रति समर्पित, धैर्यवान, निःस्वार्थी, त्यागी, दयालु, नम्र, उदारवान तथा वैष्णव आचरण युक्त होना चाहिए।
- उन्होनें शिक्षक की तीन श्रेणियाँ निर्धारित की :

- ✓ प्रधान अध्यापक।
- ✓ आश्रम अध्यापक।
- ✓ अकादमी शिक्षक

11. स्वामी चिद्भवानन्द (1898)

- शिक्षक छात्र का माता–पिता होने के साथ–साथ उसका रक्षक भी है। इतना ही नहीं छात्र उसका परिवर्धित प्रतिरूप होता है। अतः उसे अन्य सभी के लिए प्रतिमान स्वरूप होना चाहिए।
- शिक्षक श्रेष्ठ आचरण वाला, बौद्धिक विचारों वाला, इच्छाओं से परे, साधारण खान–पान व रहन–सहन वाला तथा ज्ञानी होना चाहिए।
- शिक्षक पाठ्य–पुस्तकों की अपेक्षा जीवन द्वारा शिक्षा प्रदान करने वाला तथा पिछड़े व कमजोर विद्यार्थियों पर विशेष ध्यान देने वाला होना चाहिए।

- शिक्षक का सबसे महत्वपूर्ण कार्य व्यक्ति के व्यक्तित्व एवं चरित्र का निर्माण करना होना चाहिए।

12. महर्षि महेश योगी (1915)

- महेश योगी जी ने शिक्षक को अनुपम, अतुलनीय तथा अप्रसंशनीय बताया है।
- शिक्षक ध्यान योग, साधना पद्धति एवं अन्तरात्मा का ज्ञाता होना चाहिए।
- शिक्षक जाग्रत व्यक्तित्व वाला तथा छात्रों में आदर की भावना एवं उमंग प्रस्फुटित करने वाला होना चाहिए।

13. प्रेम सत्य साईं (1926)

- श्री सत्य साईं के अनुसार शिक्षक क्रियात्मक, आत्मविश्वासी, आदर्शवादी, बौद्धिक, स्वार्थ रहित, पवित्र आचरण वाला तथा सहनशील होना चाहिए।
- शिक्षक को विद्यार्थियों से अभिभावक की तरह आचरण करने वाला, उनमें सर्वोच्च मूल्यों का बीजारोपण करने वाला, पाठ्यक्रम में आस्था रखने वाला तथा अनुभव पूर्ण ज्ञान वाला होना चाहिए।

14. आचार्य रजनीश (1931)

- आचार्य जी कहते थे कि जो शिक्षा की क्रियाओं को संचालित करे वही शिक्षक है।
- शिक्षक को छात्र के व्यक्तित्व का संतुलित विकास करने वाला, समाज की नयी आस्थाओं के प्रति जागरुक, सन्देश वाहक तथा नवीन उत्तर देने की क्षमता का विकास करने वाला होना चाहिए।

आधुनिक–कालीन चौदह संत–शिक्षाविदों द्वारा प्रतिपादित शिक्षक के 108 महत्वपूर्ण गुण

क्र. सं.	शिक्षक के गुण	संत शिक्षाविद
01	ब्रह्मचर्य की शिक्षा प्रदान करने वाला	दयानन्द सरस्वती
02	गायत्री मंत्र की साधना करने वाला	दयानन्द सरस्वती
03	अद्ध्यापन से पूर्व स्वयं अध्ययन करने वाला	दयानन्द सरस्वती
04	इन्द्रियों पर नियंत्रण रखने वाला	दयानन्द सरस्वती
05	ब्रम्ह का उपासक	दयानन्द सरस्वती
06	सत्यनिष्ठ	दयानन्द सरस्वती, विनोबा भावे
07	साधारण खान–पान वाला	दयानन्द सरस्वती, स्वामी चिद्भवानन्द
08	प्रभावशाली व्यक्तित्व	एनी बेसेन्ट
09	समस्याओं का समाधान करने वाला	एनी बेसेन्ट, भगिनी निवेदिता
10	वैज्ञानिक दृष्टिकोण	एनी बेसेन्ट
11	मौलिक विचारों को प्रोत्साहित करने वाला	एनी बेसेन्ट
12	छात्रों के बौद्धिक विकास में सहायक	एनी बेसेन्ट, अरबिंदो घोष
13	छात्रों की गलत प्रतिस्पर्धा व संकीर्णता को दूर करने वाला	एनी बेसेन्ट

14	दार्शनिक	एनी बेसेन्ट
15	विशुद्ध प्रेम करने वाला	एनी बेसेन्ट, विनोबा भावे, जिद्दू कृष्णमूर्ति, भगिनी निवेदिता, स्वामी विवेकानन्द
16	प्रशिक्षित व्यक्ति	एनी बेसेन्ट, भगिनी निवेदिता, स्वामी विवेकानन्द, स्वामी चिद्भवानन्द
17	मार्गदर्शक	एनी बेसेन्ट, भगिनी निवेदिता, स्वामी शिवानंद
18	आत्म–निर्भर	भगिनी निवेदिता
19	छात्र को आत्मनिर्भर बनाने वाला	भगिनी निवेदिता, विनोबा भावे, आचार्य रजनीश
20	रूचि व परिश्रम के साथ काम करने वाला	महर्षि कर्वे
21	धैर्यवान	महर्षि कर्वे, श्रीला प्रभुपाद स्वामी, जिद्दू कृष्णमूर्ति
22	स्थितप्रज्ञ	महर्षि कर्वे
23	हीन भावना रहित	महर्षि कर्वे
24	यथेष्ट धनोपार्जन करने वाला	महर्षि कर्वे
25	गहन चिंतन करने वाला	महर्षि कर्वे
26	नयी दिशा में बढ़ने वाला	महर्षि कर्वे
27	शास्त्रों का मर्मज्ञ व ज्ञाता	महर्षि कर्वे
28	निष्पक्ष	महर्षि कर्वे
29	तपस्वी	स्वामी विवेकानन्द
30	निःस्वार्थी	स्वामी विवेकानन्द, श्रीला प्रभुपाद स्वामी, प्रेम सत्य साईं
31	सहानुभूतिपूर्ण	स्वामी विवेकानन्द
32	त्यागी	स्वामी विवेकानन्द, श्रीला प्रभुपाद स्वामी
33	संस्कारपूर्ण	अरबिंदो घोष
34	व्यावहारिक क्षमताओं का विकास करने वाला	अरबिंदो घोष
35	स्व–शिक्षा के लिए वातावरण उत्पन्न करने वाला	अरबिंदो घोष
36	छात्र की प्रकृति के अनुसार शिक्षा प्रदान करने वाला	अरबिंदो घोष
37	आध्यात्म का ज्ञान प्रदान करने वाला	अरबिंदो घोष, स्वामी शिवानंद, प्रेम सत्य साईं
38	शिक्षण में अधिक से अधिक ज्ञानेन्द्रियों का उपयोग करने वाला	अरबिंदो घोष
39	मित्र व निर्देशक	अरबिंदो घोष
40	छात्रों की मनोवैज्ञानिक प्रकृति के अनुसार शिक्षा प्रदान करने वाला	अरबिंदो घोष
41	विषय का ज्ञाता	विनोबा भावे, महर्षि महेश योगी

42	विचार व प्रेरणा देने वाला	विनोबा भावे
43	आचरणवान	विनोबा भावे
44	ईश्वर–भक्त	विनोबा भावे
45	चरित्रवान	विनोबा भावे
46	कर्तव्यनिष्ठ	विनोबा भावे
47	खादी दर्शन में विश्वास रखने वाला	विनोबा भावे
48	दृढ़ निश्चय वाला	विनोबा भावे
49	राष्ट्रवादी	विनोबा भावे
50	शांति की स्थापना करने वाला	विनोबा भावे
51	राजनीति से दूर रहने वाला	विनोबा भावे, स्वामी चिद्भवनंद
52	शीलवान साधु की तरह	विनोबा भावे
53	प्रज्ञावान ज्ञानी की तरह	विनोबा भावे
54	करुणावान माँ की तरह	विनोबा भावे
55	सुख–दुःख व प्रशंसा से परे	विनोबा भावे
56	अहिंसा के मार्ग पर चलने वाला	विनोबा भावे
57	अच्छा सलाहकार	विनोबा भावे
58	तत्त्व ज्ञानी एवं विचारक	विनोबा भावे
59	सहनशील	विनोबा भावे, प्रेम सत्य साईं
60	आत्मसमर्पण की भावना वाला	स्वामी शिवानंद, जिद्दू कृष्णमूर्ति
61	नैतिकता का पालन करने वाला	स्वामी शिवानंद, अरबिंदो घोष
62	छात्रों से पुत्रवत व्यवहार रखने वाला	स्वामी शिवानंद
63	आदर्श मनुष्य का निर्माण करने वाला	स्वामी शिवानंद
64	जागरूक	जिद्दू कृष्णमूर्ति
65	सामाजिक बंधनों से मुक्त	जिद्दू कृष्णमूर्ति
66	समर्पित	जिद्दू कृष्णमूर्ति
67	महत्वाकांक्षा से रहित तथा अंतर्दृष्टि रखने वाला	जिद्दू कृष्णमूर्ति
68	मुक्त चिंतक	जिद्दू कृष्णमूर्ति, आचार्य रजनीश
69	बौद्धिक व्यक्ति	जिद्दू कृष्णमूर्ति, स्वामी चिद्भवानन्द, प्रेम सत्य साईं
70	दयालु	प्रभुपाद स्वामी
71	उदारवान	प्रभुपाद स्वामी
72	कृष्ण चेतना के प्रति समर्पित	प्रभुपाद स्वामी
73	सर्वश्रेष्ठ व्यक्तित्व	प्रभुपाद स्वामी
74	राष्ट्र–निर्माता	स्वामी चिद्भवानन्द
75	सभी के लिए प्रतिमान–स्वरुप	स्वामी चिद्भवानन्द
76	श्रेष्ठ आचरण वाला	स्वामी चिद्भवानन्द
77	इच्छाओं से परे	स्वामी चिद्भवानन्द
78	''आचार–संहिता'' का पालन करने वाला	स्वामी चिद्भवानन्द
79	पिछड़े व कमजोर विद्यार्थियों का विशेष ध्यान रखने वाला	स्वामी चिद्भवानन्द

80	पाठ्य पुस्तकों की अपेक्षा जीवन द्वारा शिक्षा प्रदान करने वाला	स्वामी चिद्भवानन्द
81	चरित्र का निर्माण करने वाला	स्वामी चिद्भवानन्द
82	व्यक्तित्व का निर्माण करने वाला	स्वामी चिद्भवानन्द
83	साधारण रहन–सहन वाला	स्वामी चिद्भवानन्द
84	मानव में ईश्वरत्व विकसित करने वाला	स्वामी चिद्भवानन्द
85	अभिभावक की तरह आचरण करने वाला	स्वामी चिद्भवानन्द, प्रेम सत्य साईं
86	अनुपम	महर्षि महेश योगी
87	ध्यान योग करने वाला	महर्षि महेश योगी
88	जागृत व्यक्तित्व	महर्षि महेश योगी
89	आदर की भावना उत्पन्न करने वाला	महर्षि महेश योगी
90	उमंग प्रस्फुटित करने वाला	महर्षि महेश योगी
91	अध्यव्यसायी	महर्षि महेश योगी
92	अतुलनीय	महर्षि महेश योगी
93	अप्रशंसनीय	महर्षि महेश योगी
94	भावनात्मक स्थिरता उत्पन्न करने वाला	महर्षि महेश योगी
95	क्रियात्मकता से परिपूर्ण	प्रेम सत्य साईं
96	आत्मविश्वासी	प्रेम सत्य साईं
97	आदर्शवादी	प्रेम सत्य साईं
98	सर्वोच्च मूल्यों को विकसित करने वाला	प्रेम सत्य साईं
99	पाठ्यक्रम में आस्था रखने वाला	प्रेम सत्य साईं
100	अनुभवपूर्ण ज्ञानी	प्रेम सत्य साईं
101	पवित्र आचरण वाला	प्रेम सत्य साईं
102	शिक्षा की क्रियाओं को संचालित करने वाला	आचार्य रजनीश
103	छात्र के व्यक्तित्व का संतुलित विकास करने वाला	आचार्य रजनीश
104	स्वयं से सोचने के लिए प्रेरित करने वाला	आचार्य रजनीश
105	सृजनात्मक विद्रोही	आचार्य रजनीश
106	नयी आस्थाओं के प्रति जागरूक	आचार्य रजनीश
107	नवीन उत्तर देने के लिए प्रेरित करने वाला	आचार्य रजनीश
108	संदेशवाहक	आचार्य रजनीश

शिक्षक में 18 विशिष्ट गुणों के सन्दर्भ में आधुनिक कालीन चौदह संत– शिक्षाविदों के शैक्षिक दृष्टिकोण के आधार पर प्राप्त निष्कर्ष

- ❖ सत्यनिष्ठ : दयानन्द सरस्वती, विनोबा भावे
- ❖ समस्याओं का समाधान करने वाला : एनी बेसेन्ट, भगिनी निवेदिता
- ❖ छात्रों के बौद्धिक विकास में सहायक : एनी बेसेन्ट, अरबिंदो घोष
- ❖ विशुद्ध प्रेम करने वाला : एनी बेसेन्ट, विनोबा भावे, जिद्दू कृष्णमूर्ति, भगिनी निवेदिता, स्वामी विवेकानन्द

- ❖ प्रशिक्षित व्यक्ति : एनी बेसेन्ट, भगिनी निवेदिता, स्वामी विवेकानन्द, स्वामी चिद्भवानन्द
- ❖ मार्गदर्शक : एनी बेसेन्ट, भगिनी निवेदिता, स्वामी शिवानंद
- ❖ छात्र को आत्मनिर्भर बनाने वाला : भगिनी निवेदिता, विनोबा भावे, आचार्य रजनीश
- ❖ धैर्यवान : महर्षि कर्वे, श्रीला प्रभुपाद स्वामी, जिद्दू कृष्णमूर्ति
- ❖ निःस्वार्थी : स्वामी विवेकानन्द, श्रीला प्रभुपाद स्वामी, प्रेम सत्य साईं
- ❖ त्यागी : स्वामी विवेकानन्द, श्रीला प्रभुपाद स्वामी
- ❖ आध्यात्म का ज्ञान प्रदान करने वाला : अरबिंदो घोष, स्वामी शिवानंद, प्रेम सत्य साईं
- ❖ विषय का ज्ञाता : विनोबा भावे, महर्षि महेश योगी
- ❖ राजनीति से दूर रहने वाला : विनोबा भावे, स्वामी चिद्भवनंद
- ❖ सहनशील : विनोबा भावे, प्रेम सत्य साईं
- ❖ नैतिकता का पालन करने वाला : स्वामी शिवानंद, अरबिंदो घोष
- ❖ मुक्त चिंतक : जिद्दू कृष्णमूर्ति, आचार्य रजनीश
- ❖ बौद्धिक व्यक्ति : जिद्दू कृष्णमूर्ति, स्वामी चिद्भवानन्द, प्रेम सत्य साईं
- ❖ अभिभावक की तरह आचरण करने वाला : स्वामी चिद्भवानन्द, प्रेम सत्य साईं

शोधित निष्कर्षों का अध्ययन करने के पश्चात ज्ञात हुआ की संविधान में शिक्षक के सन्दर्भ में प्रावधान सम्मिलित नहीं है। शिक्षा आयोगों, नीतियों तथा प्रतिवेदनों में शिक्षकों के सतत् विकास के विभिन्न पक्षों यथा सभी स्तरों पर चयन प्रक्रिया, सुविधाएँ, प्रोन्नति प्रक्रिया, वेतनमान, प्रशिक्षण, दक्षता तथा स्थानांतरण आदि के विषय में संस्तुतियाँ प्रेषित की गयी हैं। जबकि आधुनिक कालीन चौदह संत–शिक्षाविदों ने शिक्षक के व्यक्तित्व के सामान्य, विशिष्ट व महत्त्वपूर्ण १०८ गुणों के बारे में चर्चा की है। यदि ये गुण शिक्षक के व्यक्तित्व का हिस्सा न बन पाए तो प्रबुद्ध भारत का स्वप्न कैसे मूर्त रूप ले सकेगा? हमें चाहिए एक आध्यात्म से परिपूर्ण, समर्पित, डिजिटल रूप से प्रशिक्षित, दक्ष, प्रतिभावान, प्रबुद्ध एवं योग्य शिक्षक जो समाज को राष्ट्रीय भावनाओं से युक्त, आत्मनिर्भर एवं योग्य युवक प्रदान कर सके तथा जो राष्ट्र का विकास सकारात्मक दृष्टि से कर सके।

अग्रिम सोच

आधुनिककालीन चौदह संत–शिक्षाविदों द्वारा संश्लेषित व विश्लेषित 'शिक्षक' के व्यक्तित्व के १०८ गुणों का पता लगा लेने के पश्चात एक ऐसा मानकीकृत परीक्षण तैयार किया जाये जो शिक्षक के चयन हेतु उसमे विद्यमान गुणों को ढूढ़ सके तथा अपेक्षित अन्य गुणों को विकसित करने हेतु अंतर्दृष्टि प्रदान कर सके। इसके परिणाम स्वरुप हमें मिल सकेगा एक गुणवत्तापरक, वैज्ञानिक दृष्टिकोण युक्त तथा डिजिटल रूप से विशेषज्ञ शिक्षक जो राष्ट्र की उत्पादकता व विकास में सृजनात्मक सहयोग एवं भारतवर्ष के प्रकाश–स्तम्भ स्वरुप शिक्षालयों को वास्तविक रोशनी प्रदान कर सकेगा।

सन्दर्भ

1. Altekar, A.S. (1948). Education in Ancient India. Patna University. Nand Kishore & Bros. Bans Phatak. Third Edition.
2. Aitreya, Arti. (1981). Educational Philosophy of Annie Besant. M.Ed. Thesis. M.J.P. Rohilkhand University: Bareilly.
3. Arora, Pamkaj., Sharma, Usha. Rashtriya Shiksha Neeti – Rachnatmak Sudharon ki Or. Shipra Publications: Delhi.
4. Buch, M.B. (1972). First Survey of Research in Education.
5. Buch, M.B. Second Survey of Research in Education.
6. Buch, M.B. Third Survey of Research in Education.
7. Buch, M.B. Fourth Survey of Research in Education.
8. Buch, M.B. (1988-92). *Fifth Survey of Research in Education*. Vol. 1.
9. Chauhan, B.P.S. (1981). Educational Philosophy of Swami Dayananda. Ph.D. C.C.S. University: Meerut.
10. Dev, Monika. (1990). Osho Rajneesh Ka Shiksha Darshan TathaBhartiya Sandarbh Mein Uski Upadeyata. M.J.P. Rohilkhand University: Bareilly.
11. Dutta, T.A. (1978). A Study of the Philosophy of Vivekananda with Reference to Advaita Vedanta and Great Universal Heart of Buddha. Ph.D.
12. Goel, V.K. (1983-84). The Educational Philosophy of Shrila Prabhupad swami – A Critical Evaluation, Dissertation. M.Ed. M.J.P. Rohilkhand University: Bareilly.
13. Goswami, H.S. (1961). An Enquiry into the Fundamentals of Educational Philosophy in the East and West. Ph.D. – Education. Kolkata University.
14. Gupta, Anju. (1990). Bhagini Nivedita"s Educational Philosophy in the Context of Modern Indian Condition. Dissertation. M.Ed. M.J.P. Rohilkhand University: Bareilly.
15. Gupta, Prof. S.P., Gupta, Dr Alka. National Education Policy – 2020 : A Simple Introduction. Sharda Pustak Bhawan: Prayagraj.
16. Gupta, U.M. Aurobindo Ka Siksha Darshan – Ek Alochanatmak Addhyayan. M.J.P. Rohilkhand University: Bareilly.
17. Km. Usha. Educational Philosophy of Aurobindo. Hindu College, Moradabad. M.J.P. Rohilkhand University: Bareilly.
18. Khushdil, M. Swami Dayananda Ka Shiksha Darshan. M.J.P. Rohilkhand University: Bareilly

19. Kumar, Rusen., Singh, Dr Rana. India"s National Education Policy 2020 – An Overview. Xpress Publishing: Chennai.
20. Mandal, Dr. Keshab Chandra. National Education Policy 2020 : The Key to Development in India.
21. Raizada, G. Educational Philosophy of Swami Chidbhavananda. M.Ed. Thesis. M.J.P. Rohilkhand University: Bareilly.
22. Rani, Seema. Maharshi Karve Ke Shiksha Darshan Ka Adhunik Sandarbh Mein Ek Tulnatmak Addhyayan. Dissertation–M.Ed. M.J.P. Rohilkhand University: bareilly.
23. Sharma, Radha. The Educational Philosophy of Swami shivananda. Dissertation – M.Ed. M.J.P. Rohilkhand University: Bareilly.
24. Sharma, S.D. The Educational Philosophy of Shri Sathya Sai–A Critical Appraisal. M.J.P. Rohilkhand University: Bareilly.